विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 14 जुलाई 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

धातु रूप

संस्कृत व्याकरण में क्रिया पदों को क्रिया के फल - प्राप्ति के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है

1. **आत्मनेपदी -** जब क्रिया का फल स्वयं कर्ता को प्राप्त हो रहा हो तो क्रिया आत्मनेपदी कहलाती है। संक्षेप में जब क्रिया अकर्मक हो, तो वह आत्मनेपदी कहलाती है। जैसे – रामः पचते। (राम अपने लिए पका रहा है।)
2. **परस्मैपदी -** जब क्रिया का फल स्वयं कर्ता को प्राप्त ना हो कर किसी अन्य को प्राप्त हो रहा हो तो क्रिया परस्मैपदी कहलाती है अथवा जब क्रिया सकर्मक हो तो वह परस्मैपदी कहलाती है।
   जैसे राम: पचती। (राम दूसरों के लिए पका रहा है।)
   कुछ धातुएँ उभयपदी होती है। उनके रूप आत्मनेपद तथा परस्मैपद दोनों के अनुसार चलते हैं।

   तिङ् 18 प्रत्यय के समूह का नाम है, जिसमें 9 प्रत्यय आत्मनेपद क्रिया पदों के लिए है तथा अन्य 9 प्रत्यय परस्मैपद क्रिया पदों के लिए प्रयुक्त होता है

संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं अथवा धातुओं के काल तथा अवस्था के आधार पर 10 लकारों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं- लट् लकार, लोट् लकार, लङ् लकार, विधिलिङ्, , लिट् लकार, लुट् लकार, लेट् लकार तथा लृङ् लकार। परन्तु 5 लकारों को ही मुख्यतया प्रयोग में लाया जाता है।